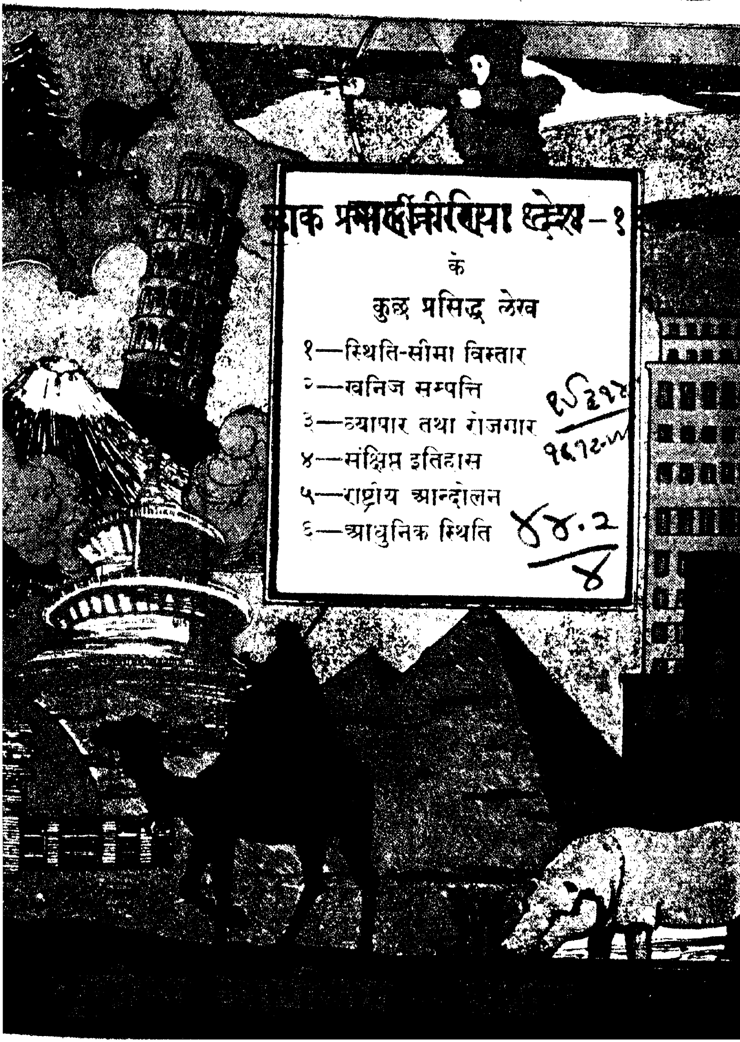
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—३६



[illegible] –१

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

नवम्बर १९४२] **देश-दर्शन** [कार्तिक १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४]

अल्जीरिया

संख्या ५
पूर्ण संख्या ३९

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-	
Foreign	Rs. 6/-	
This copy	As. -/6/-	

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

उत्तरी अफ्रीका में भूमध्य सागर पर एक देश है। इसके उत्तर में भूमध्य सागर, पूर्व में ट्यूनिस, दक्षिण में लीबिया और पश्चिम में मरक्को है। यह ३७ और ३४ अंश उत्तरी अक्षांश तथा २'१०° और ८'५०° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल १,२६,६४७ वर्गमील है। इसकी लम्बाई ६८८ मील और चौड़ाई १८८ से २५० मील तक है। इसका आकार संकरा आयताकार है। १६०२ ई० में इसका दक्षिणी भाग इससे अलग कर दिया गया है और उसका शासन अलग होता है। दक्षिणी भाग का क्षेत्रफल १३,३०,८७५ वर्ग मील है। यह भाग उत्तरी अलजीरिया से दस गुना बड़ा है। दक्षिणी भाग का सबसे दक्षिणी स्थान टिनज़औटेन है। यह स्थान अल्जियर्स से १०४७ मील की दूरी पर है। दक्षिणी भाग मरुस्थल है और वहां किसी प्रकार की उपज नहीं होती। अब वहां उन्नति की ओर ध्यान दिया जा रहा है।

देश दर्शन

प्राकृतिक बनावट

अल्जीरिया एक पहाड़ी देश है। इसके सीमाओं पर पहाड़ हैं और पहाड़ी ढालों पर घास के बड़े बड़े मैदान हैं। भूमध्य सागर अथवा सहारा मरुस्थल पहुँचने के लिये पहाड़ों को अवश्य पार करना पड़ता है। टेल प्रदेश सबसे अधिक हरा-भरा तथा उपजाऊ प्रदेश है। स्टेपो (घास का मैदान) में चरागाहें हैं जहां गड़रिये गल्लेबानी करते हैं। सहारा प्रदेश में पानी न होने के कारण सूखा प्रदेश है। बीच बीच में ओसिस है जहां खेती होती है। टेल प्रदेश के रेगिस्तानी प्रदेश में बीच बीच में कहीं कहीं ओसिस हैं।

अल्जीरिया की सबसे ऊँची चोटी गेलिया है। यह चोटी लगभग ८ हज़ार फुट की ऊँचाई पर ओरेस श्रेणी में स्थित है। कबीलिया श्रेणी में सर्वोच्च चोटी लल कदी-लिया है जो लगभग ७ हज़ार फुट ऊँचो है। यहां की भूमि पहाड़ी है। देश का ६८ प्रतिशत भाग ढाई हजार से ५ हज़ार फुट तक की ऊँचाई पर स्थित है। तटीय प्रदेश साधारण रूप से पहाड़ी है केवल कुछ स्थानों पर

नीचे पहाड़ी ढालों के छोटे छोटे टुकड़े हैं। तटीय प्रदेश में संकरी खाड़ियां हैं। मेसुल कबीर, अर्जेयु, अल्जियर्स बौमि, फिलिपेविल्ले और बोने आदि अर्द्ध गोलाकार खाड़ियां तटीय प्रदेश में स्थित हैं।

अल्जियर्स के पूर्व ज्वालामुखी प्रदेश में पुरानी और पैलेजोइक चट्टानें हैं। भूमध्यसागर से सहारा तक गोण पर्वत पाये जाते हैं। टरशियरी चट्टानों में चूना, बलुआ पत्थर और मिट्टी पाई जाती है।

अल्जीरिया की पहाड़ी श्रेणियां दो प्रधान भागों में विभाजित हैं। १—टेल अटलस २—सहारा श्रेणी। यह दोनों भाग एक संकरी पट्टी द्वारा अलग हो गये हैं। सहारा अटलस अल्जीरिया और मरुस्थल के मध्य सीमा स्थापित करता है। अल्जीयर्स के आगे चलकर कटिबंधों या प्रदेशों को एक दूसरे से अलग करना बहुत कठिन है। कबीलिया के टेल पर्वत ओरन के टेल पर्वतों की अपेक्षा अधिक ऊँचे हैं। बोने स्थान पर टेल अटलस की उत्तरी-पूर्वी शाखा समुद्र-तट तक जाती है और अल्जीरिया के पठार को ट्यूनिस के शेल से अलग करती है।

देश दर्शन

अट्टागर या मध्यवर्ती त्वारेग की चट्टानें शान्त ज्वालामुखी पर्वतों से बनी हैं। इसके चारों ओर बलुहे पत्थर के पठार हैं जिन्हें अज़्जेर के ताज़िली और मुईदेर अहमत कहते हैं। इगागर बेसिन को सओरा से क्रेटैसियस पठार अलग करता है। सओरा का मैदान दक्षिण की ओर ढालू है। इगागर बेसिन में वार्कला, वाद-रिर और जिवन्स के ओसिस हैं। सओरा के मरुस्थली मैदान में गुरारा, त्वात और तिरीकेल्त के ओसिस स्थित हैं। पूर्व और पश्चिम की ओर बालूदार पहाड़ियों की श्रेणियां हैं।



अल्जीरिया-दर्शन

खनिज सम्पत्ति

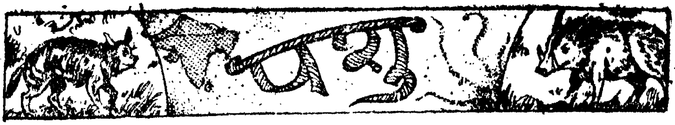
अल्जीरिया में तेबेसा के समीप जेबेल क्विफ में तेज़ाबी नमक बहुत पाया जाता है। तेज़ाबी नमक की उत्पत्ति में मोरक्को, ट्यूनिस और अल्जीरिया में प्रति वर्ष २,२४,००,००० मन के लगभग तेजाबी नमक उत्पन्न होता है। ट्यूनिस की सेना के समीप वेंजा, (बू-काद्रा) में मिलान (जाबार, रवीना) प्रदेश, और ओरन तट (बनी-साफ) में अच्छा लोहा पाया जाता है। इन स्थानों में प्रति वर्ष ४,४८,००,००० मन लोहा निकाला जाता है। यह समस्त लोहा युद्ध के पहले इँगलैंड भेजा जाता था। अल्जीरिया के कई स्थानों में जस्ता और सीसा पाया जाता है। प्रतिवर्ष जस्ते की उपज ११,२०,००० मन है। खनिज-सम्पत्ति में कान्स्टैन्टाइन प्रदेश सबसे अधिक धनी है। ऐन-जेफ़्त (दहरा) और मेसीला में मिट्टी का तेल पाया जाता है। औरान के दक्षिण केनादसा में कोयला पाया जाता है। अल्जीरिया के खनिज पदार्थ कच्चे ही दूसरे देशों को भेज दिये जाते हैं फिर भी कच्चे सामान को ढोने के लिये रेलों आदि में काफी उन्नति हो गई है।

जलवायु

शीतकाल में दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवायें पश्चिमी भूमध्यसागर से आती हैं। गरमी के दिनों में हवायें पूर्व और उत्तर-पूर्व की ओर से आती हैं और फिर सहारा की ओर चली जाती हैं। यह हवायें शुष्क रहती हैं। लूह की भांति दक्षिण की ओर मरुस्थल से सिरक्को हवा चलती है और समस्त अल्जीरिया को सुखा डालती है। तटीय प्रदेश का शीतकालीन ताप औसत से ५० से ५४ अंश तक होता है। ग्रीष्म काल में तटीय प्रदेश का ताप ७५ से ७९ अंश तक रहता है। गरमी की ऋतु बड़ी होती है फिर उसमें भाप भरी हवाओं का मिश्रण हो जाता है जिससे ग्रीष्म काल बड़ा ही कष्टदायक हो जाता है। समुद्र से दूर वाले स्थान बड़े शुष्क तथा गरम रहते हैं। भीतर की ओर अधिक दूर वाले स्थानों का शीत कालीन तापक्रम ३९ से ४३° तक रहता है और पाला खूब पड़ता है। गरमी के दिनों में इन भीतरी स्थानों का तापक्रम औसत से ७९ से ८३ अंश तक रहता है। गरमी के दिनों में अल्जीरिया में सबसे अधिक तापक्रम ९५° और सहारा में १०५ अंश रहता है। जनवरी से अगस्त तक वर्षा कम होती जाती है।

सितम्बर मास से वर्षा अधिक होने लगती है और दिसम्बर मास तक खूब होती है। जून से सितम्बर मास तक बहुत कम वर्षा होती है। डेलीस से ट्यूनिस की सीमा तक लगभग ३२ इंच वर्षा होती है। टेनेस से डेलीस तक २३ इंच से ३२ इंच तक वर्षा होती है। अल्जीयर्स में ३० इंच टेनेस के पश्चिम ओरान तट और टेल में १५ से २४ इञ्च तक वर्षा होती है। ऊँचे पठारों और अटलस पर्वतों पर ७ से १५ इञ्च तक पानी बरसता है। बिस्क्रा में ५ इञ्च प्रति वर्ष वर्षा होती है।

अल्जीरिया की अधिकांश नदियां बरसाती हैं। बहुत सी नदियां तो अपने निकलने के स्थान से आगे बढ़ने पर सिकुड़ती जाती हैं। चेलिफ मुख्य नदी है। यह नदी लगभग ७० मील लम्बी है। जौस्फाना और ग्विर छोटी नदियां हैं। वादी मिआ और वादी इगारगर मृतक नदियां हैं।



बनस्पति और पशु-पक्षी

अल्जीरिया में ३५०० प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। जिसमें ५०० प्रकार की बनस्पतियां बड़ी ही अनोखी हैं। सदाबहार वृक्ष तथा झाड़ियां बहुत हैं। जैतून के वृक्ष बहुत पाये जाते हैं। जहां १५ इञ्च से कम वर्षा होती है वहां अलफाल्फा आदि घास तथा झाड़ियां पाई जाती हैं। बनों में कार्क वाले वृक्ष बहुत हैं। सेब्दू, सैदा, फ्रेंडा, तिआरेत, बोगारी, बोर्ज बू अरेरिज, कान्स्टैंटाइन और सुक अहरास होकर स्टेप (घास वाले) बन हैं। सहारा प्रदेश की बनस्पति बड़ी ही विचित्र है। वर्षा होने पर वह बड़ी शीघ्रता के साथ बढ़ती है। ओसिसों (नखलिस्तानों) में खजूर के वृक्ष बहुत हैं। बलुही पहाड़ियों के मध्य भी कुछ बनस्पति पाई जाती है।

अल्जीरिया में बहुत कम जंगली पशु पाये जाते हैं। शेर तो वहां के बनों से लुप्त हो गया है। तेंदुआ आदि पशु पाये जाते हैं। बन्दर, सियार, जंगली सुअर आदि जानवर बनों में बहुत हैं।

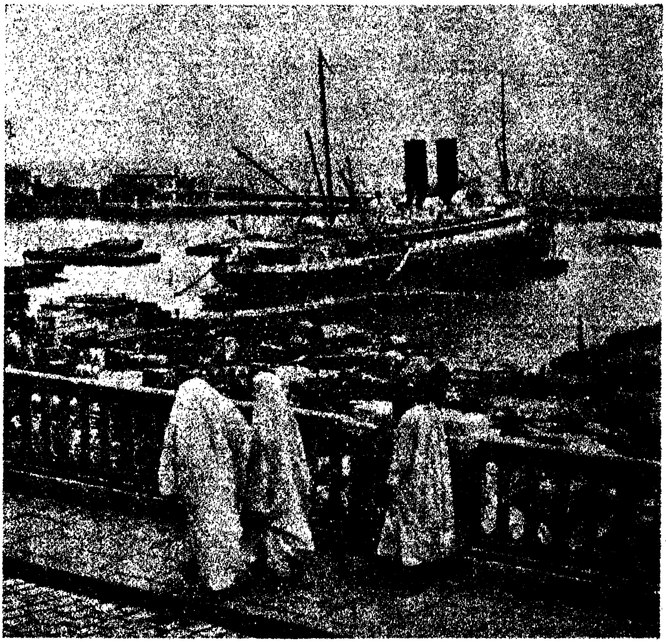
अल्जीरिया की मुख्य उपज अनाज है। लगभग ७५



अल्जीर्स नगर के संतरा बेचने वाले अपने संतरों को कपड़ा बिछा कर ज़मीन पर सजाते हैं।



अल्जीरिया के बाजा बजाने वाले इसी प्रकार का सितार लेकर एक दूकान से दूसरी पर बजाते हुये भीख मांगते हैं।



अलजीर्स के भीतरी बन्दरगाह का एक दृश्य।

लाख एकड़ में खेती होती है। खेती करने का देशी लोगों का तरीका बहुत पुराना है परन्तु फ्रांसीसी तथा योरुपीय लोग आधुनिक वैज्ञानिक रूप से खेती करते हैं जिससे उपज में कमी या अधिकता वर्षा के अनुसार होती रहती है। मुलायम गेहूँ प्रति वर्ष योरुपीय खेतों से २० लाख क्विन्टल (२५ लाख मन) और देशी खेती से ६ लाख क्विन्टल (१८ लाख ७५ हजार मन) और देशी खेती से साढ़े ६ लाख क्विन्टल (७ लाख ५० हजार मन) होता है। अंगूर की उपज में अल्जीरिया का नम्बर बहुत बढ़ चढ़ कर है। मक्का जैतून की उपज भी होती है। योरुपीय लोग अंगूर की खेती अधिक करते हैं। अंगूर की खेती लगभग ५ लाख एकड़ भूमि में की जाती है। ओरान में २ लाख ७० हज़ार एकड़, अल्जेर में एक लाख ७० हजार एकड़ और कान्सटैंटाइन में ४० हजार एकड़ भूमि में अंगूर की खेती की जाती है। मैदान, पहाड़ी तलहटी तथा पहाड़ों के ऊपर अंगूर के बाग लगाये जाते हैं और उनकी उपज में बहुत अन्तर पड़ता है। जैतून की खपत अधिकतर अल्जीरिया में ही हो जाती है परन्तु अंगूर से अंगूरी शराब बनाकर

फ्रांस भेजी जाती है। जैतून की उपज से प्रति वर्ष ३ लाख क्विंटल (३ लाख ७५ हज़ार मन) तेल निकाला जाता है। कबीलिया में जैतून की उपज अधिक होती है। अंजीर, नारंगी, खूबानी, खजूर, मटर, सेम, टमाटर, आलू आदि की भी अच्छी उपज होती है।

८० हज़ार एकड़ भूमि में तम्बाकू की खेती होती है। अल्जीरिया में ३ लाख ७५ मन तम्बाकू प्रति वर्ष उत्पन्न होती है। कबीलिया प्रान्त में इसकी उपज अधिक होती है। अल्जियर्स के समीप इत्र बनाने के लिये पुष्प वाटिकाएँ लगाई जाती हैं जहां फूल खूब उत्पन्न होता है। अमरीकन क्रान्ति के समय में अल्जीरिया में कपास की खेती आरम्भ की गई थी। अब प्रति वर्ष लगभग ७५ हजार मन रुई पैदा होती है। सिंचाई के लिये भी काफी प्रबन्ध है। तालाबों और आरटीज़ियन कुवों से सिंचाई होती है।

दक्षिणी भाग में खजूर की उत्पत्ति अधिक होती है। अल्जीरिया में ८० या ६० लाख भेड़ें और ६० लाख बकरियां पाली जाती हैं; १० लाख पशु, २ लाख घोड़े, ३ लाख गधे, १ लाख ५० हज़ार खच्चर

पाले जाते हैं। लगभग १ लाख भेड़ें प्रति वर्ष मांस के लिये विदेशों को भेजी जाती हैं। ऊन की पैदावार कम है फिर भी प्रति वर्ष लगभग ५ लाख मन ऊन भेड़ बकरियों से मिलता है।

अल्जीरिया में ७२ लाख एकड़ भूमि में बन हैं। प्रति वर्ष बनों से २ लाख ५० हज़ार कार्क की उपज होती है। १ करोड़ एकड़ भूमि में अल्फाफा के बन हैं जिससे कागज़ के लिये १८ लाख ७५ हजार मन लुग्दी तयार की जाती है। नारियल के वृक्षों से ६ लाख २५ हजार मन रेशा प्रति वर्ष मिलता है।

आने जाने के साधन

अल्जीरिया में लगभग २८०० मील रेलवे लाइन है। इसका कुछ भाग फ्रांस की पी० एल० एम० कम्पनी के प्रबन्ध में और कुछ भाग अल्जीरिया स्टेट रेलवे की देख रेख में है। मोरक्को से ट्यूनिस की सीमा को एक केन्द्रीय लाइन जाती है। इसकी शाखा लाइनें बेनी साफ, ओरान, अर्ज़ेयू, मोस्टागानेम, टेनेस, अलजीयर्स,

डेलेस, बौगी, फिलिप विल्लो से लगभग ३४० मील की की दूरी पर हैं। रेलवे लाइनों के अतिरिक्त सड़कों का एक सुन्दर जाल बिछा हुआ है। सहारा प्रदेश में भी रेलवे लाइन बनने का काम जारी किया गया है। सहारा में आटोमो बाइल गाड़ियाँ चला करती हैं।

अल्जीयर्स के बन्दरगाह पर प्रति वर्ष २,४४२,००० टन सामान चढ़ता उतरता है। ओरान के बन्दरगाह पर प्रतिवर्ष जहाजों द्वारा २२ लाख १५ हज़ार टन सामान चढ़ाया तथा उतारा जाता है। यह प्रथम श्रेणी के बन्दरगाह हैं इनके अतिरिक्त नेमौर्स बेनीसाफ मोस्टा-गानेम, चेरचेल, जिजेल्लो, कोलो और लाकाले के छोटे बन्दरगाह हैं। १८८६ ई० के नियमानुसार फ्राँस और अल्जीरिया के मध्य केवल फ्रांसीसी जहाज ही व्यापार कर सकते हैं।

व्यापार और रोज़गार

अल्जीरिया का देशी व्यवसाय योरुपीय व्यवसाय का सामना नहीं कर सकता फिर दरी और कालीन बनाने का व्यवसाय अब तक कायम रखने का प्रयत्न किया गया है। योरुपीय लोगों के जो कारखाने अल्जीरिया में हैं उनमें तेल निकालने, शराब तयार करने, आटा पीसने, चमड़ा तयार करने, तम्बाकू तयार करने और दियासलाई बनाने का काम किया जाता है।

फ्रांस और अल्जीरिया के मध्य व्यापार अधिक होता है। अल्जीरिया से कच्चा सामान लोहा आदि इँगलैंड जाता है। अल्जीरिया की कृषि की उपज का सामान फ्रांस भेजा जाता है और फिर वहाँ से उसके बदले में कारखानों का बना हुआ सामान, धातु, कोयला और दूसरे उपनिवेशों का सामान अल्जीरिया आता है। शराब, तेल, अनाज, भेड़, ऊन, कच्चा लोहा, तेज़ाबी नमक आदि सामान अल्जीरिया से बाहर भेजा जाता है। अल्जीरिया में आने वाले सामान का मूल्य वहां से जाने वाले सामान से अधिक है। ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पश्चात् अल्जीरिया ही फ्रांसीसी सामान का सबसे बड़ा खरीदार है।

संक्षिप्त इतिहास

अल्जीरिया बारबैरी या मोग़रेब प्रदेश का एक भाग है इसलिये अल्जीरिया का इतिहास ट्यूनिस और मोरक्को के साथ ही मिश्रित है। जब मध्य मोगरेब में तुर्की शासन स्थापित हुआ तो अल्जीयर्स नाम का प्रयोग आरम्भ हुआ। उसके बाद जिस प्रदेश पर अल्जीयर्स की रिजेन्सी थी उसका नाम अल्जीरिया रख दिया गया।

अल्जीरिया के निवासी बेरबेर कहलाते हैं। बेरबेर लोग कई वर्णों में विभाजित हैं इसी लिये प्रत्येक वर्ण या वर्ग का इतिहास ही अलग है। बेरबेर जाति ने कभी भी अपनी धरती का शासन संगठित रूप से नहीं किया। अल्जीरिया की राजधानी भी उत्तरी अफ्रीका में न रह कर कभी स्पेन और कभी रोम में रही। कार्थेजीनिया, रोमन, वंदल, बैजेनटाइन, अरब, तुर्क और फ्रांसीसी जातियों ने भिन्न-भिन्न समय में उत्तरी अफ्रीका पर अपने आक्रमण करके एक बड़ा राज्य स्थापित किया और उसके बाद उस राज्य का विनाश भी अति शीघ्र हो गया।

जब से फोनीसियन जाति उत्तरी अफ्रीका के तट

पर जाकर बसी तब से उत्तरी अफ्रीका का इतिहास आरम्भ होता है। आठवीं सदी में कार्थेज ने उत्तरी अफ्रीका पर अधिकार जमाया और वहां के निवासियों पर कर लगाया।

कार्थेज के पतन के पश्चात् अल्जीरिया का शासन स्थानीय राजा रोम के आदेशानुसार राज्य करते रहे। रोमन शासन के पश्चात् वंडल आक्रमण उत्तरी अफ्रीका पर हुआ उसके बाद बैज़ेंटाइन शासन स्थापित हुआ।

बारहवीं सदी में अरब जाति ने उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण किया और रोमन संस्कृति को नष्ट कर डाला। इस प्रकार अल्जीरिया का सम्बन्ध रोम से अलग होकर मुसलिम संसार के साथ स्थापित हुआ। अरब लोगों का प्रथम आक्रमण सातवीं सदी में हुआ उसके बाद ग्यारहवीं सदी में हेजाज़ की हिलाल और सोलीम जातियों ने आक्रमण किया। नगरों और मैदानों में अरब जाति ने अपना धर्म तथा भाषा प्रचार ज़बरदस्ती लोगों पर किया। मध्यकालीन समय में बेरबेर जाति ने अपने बड़े तथा शक्तिशाली साम्राज्य अल्मोराविद तथा अलमोहद वंशों के थे। इन वंशों का

शासन केवल उत्तरी अफ्रीका तक ही नहीं वरन् स्पेन तक फैला हुआ था।

अल्मोहद साम्राज्य के पतन होने पर तेरहवीं सदी में तीन राज्य स्थापित हुये। यह राज्य फेज़ के मेरीनिद, त्लेसेन के अब्दुल वत्राडाइट और ट्यूनिस के हफ्लाइड घरानों के थे। यह राज्य आधुनिक मोरक्को, ट्यूनिस और अल्जीरिया की भांति ही अलग-अलग राज्य थे। सोलहवीं सदी में बेरबेर जाति बड़ी शक्तिहीन हो गई और आपसी झगड़े से सत्यानाश हो गई तो स्पेन, पुर्तगाल और तुर्क लोगों का उत्तरी अफ्रीका पर प्रभुत्व हो गया।

तुर्की काल (१५१८-१८३०)

आइबेरिया प्रायद्वीप जीतने के पश्चात् उत्तरी अफ्रीका में स्पेनी तथा पुर्तगाली लोग तुर्कों के विरुद्ध युद्ध करते रहे। १५०६ ई० में ओरान और १५१० ई० में अल्जीयर्स पर स्पेनी और पुर्तगाली लोगों ने अधिकार प्राप्त कर लिया। उसके बाद स्पेनी लोगों ने अल्जियर्स बन्दरगाह के एक छोटे द्वीप पर पेनोन नामक एक किला बनाया और उत्तरी अफ्रीका के अधिकांश भाग पर

अधिकार जमा लिया। परन्तु अल्जीरिया के निवासियों ने तुर्की बारबरोसा दरयाई लुटेरों को स्पेनी शासन नष्ट करने के लिये बुलाया। अराउद्दज ने अल्जीयर्स और टेनेस पर अधिकार कर लिया। उसके बाद उसका भाई खैर उद्दीन शासक बना, उसने ही अल्जीरिया के मुखतारी की नींव डाली। उसने कुस्तुनतुनिया के तुर्क राजा को कर दिया। कर के बदले में तुर्क राजा ने उसे बेलीरबे की उपाधि दी और तुर्कों को उसकी सेवा करने के लिये आज्ञा दी। १५४१ ई० में चार्ल्स पंचम ने अल्जीयर्स पर आक्रमण किया परन्तु उसे सफलता नहीं प्राप्त हुई। ओरान पर स्पेन वालों ने अधिकार अवश्य कर लिया परन्तु १७०८ ई० में तुर्क लोगों ने उसे छीन लिया। १७३२ ई० में स्पेन ने फिर उस पर अधिकार कर लिया परन्तु १७६१ ई० में स्पेन को अन्तिम बार नगर छोड़ देना पड़ा।

उत्तरी अफ्रीका में तुर्की शासन का प्रथम काल १५१८ से १५८७ ई० तक रहा। इस काल का अन्तिम तुर्की राजा फुल्ज अली था। उसके बाद तीन वर्ष तक

शासन करने वाले तुर्क पाशाओं तथा डेज़ (गवरनरों) का शासन उत्तरी अफ्रीका पर रहा। गवरनरों और पाशाओं के समय अल्जीरिया की उन्नति हुई और उसे कुछ स्वतंत्रता के अधिकार भी प्राप्त हुये। तुर्क लोग अल्जीरिया पर शासन वहां की प्रजा को एक दूसरे से लड़ा लड़ा कर करते रहे। राय, मक़ज़ेन और ओदजाक वर्ग सदैव आपस में लड़ते रहते थे। रोम लोगों के ऊपर बहुत अधिक कर लगाया जाता था। तुर्क शासक प्रजा के धार्मिक कार्यों तथा रिवाजों में रुकावट नहीं डालते थे उनका मुख्य कार्य कर वसूल करना था। ३०० वर्ष तक अल्जीयर्स समुद्री डाकुओं का केन्द्र बना रहा।

सोलहवीं सदी में मारसीले के व्यापारियों ने बार-बारी तट पर बोने, काले, बास्टियनडे फ्रांस आदि स्थानों में मोती निकालने के अड्डे स्थापित किये। ईसाई राष्ट्रों में फ्रांस का सम्बन्ध अल्जीरिया के साथ अधिक घनिष्ट रहा। १४ जून १८३० ई० को जनरल डे बोर-मोंट की देख रेख में ३७ हज़ार फ्रांसीसी सेना सिदी फेरुच स्थान पर जा उतरी। ५ जुलाई को फ्रांसीसी

सेना ने अल्जियर्स पर अधिकार कर लिया और तुर्की शासन का अलजीरिया से अंत कर दिया। २२ जुलाई सन् १८३४ ई० को सरकारी घोषणा के अनुसार उत्तरी अफ्रीका के फ्राँसीसी राज्य का एक फ्रांसीसी गवरनर जनरल नियुक्त किया गया। अहमद बे और अब्दुल क़ादिर की छत्रछाया में अलजीरिया के निवासी फ्रांसीसी शासन के विरुद्ध बलवा करते रहे। उसके बाद कान्स्टैनटाइन प्रान्त पर भी फ्रांसीसियों का अधिकार हो गया। अब्दुल कादिर के साथ फ्राँसीसी गवरनरों को बहुत समय तक युद्ध करना पड़ा। १८४८ ई० तक समस्त अलजीरिया पर फ्रांसीसियों का शासन स्थापित हो गया।

अलजीरिया फ्रांस के इतना समीप है कि फ्रांस में घटित होने वाली समस्त घटनाओं का उस पर प्रभाव पड़ता है। इसी कारण १८४८ ई० की क्रांति का भी प्रभाव अल्जीरिया पर पड़ा जिससे वहां के संगठन में बड़े बड़े परिवर्तन करने पड़े। अल्जीरिया कई विभागों में विभाजित कर दिया गया और पेरिस से बेकार मज़दूर यहां लाकर बसाये जाने लगे। ११ जनवरी १८५१ ई०

के नियमानुसार अल्जीरिया में भी फ्राँसीसी नियम के अनुसार कर लगाया जाने लगा। १८५१ ई० में जनरल रैण्डोंन अल्जीरिया का गवरनर जनरल बनाया गया। कबीलिया पर अधिकार जमा कर उसने समस्त अल्जीरिया पर अपना शासन स्थापित कर लिया और इसी स्थान पर उसने नैपोलियन नामक किला बनाया। इसी गवरनर जनरल के समय में अल्जीरिया में प्रथम रेलवे लाइन बनाई गई।

१८५८ ई० में गवरनर जनरल का पद रद्द कर दिया गया और अल्जीरिया में अल्जीरिया तथा फ्रांसीसी बस्तियों का एक मंत्रीमंडल बनाया गया। परन्तु यह मंत्रीमंडल अधिक समय तक नहीं चल सका और २४ नवम्बर १८६० ई० की फ्रांसीसी आज्ञानुसार फिर यहां का फ्रांसीसी गवरनर जनरल का पद बनाया गया और मार्शलपिली सीर गवरनर जनरल नियुक्त किया गया। उसकी मृत्यु के बाद मार्शल डे मैक्माहाने गवरनर जनरल बनाया गया। उस समय फ्रांस का राजा नैपोलियन तृतीय था। उसका कहना था कि अल्जीरिया एक अरब राज्य है इसलिये वहां फ्रांसीसी बस्ती नहीं बसाना

चाहिये। २२ अप्रैल १८६३ ई० की घोषणा के अनुसार अल्जीरिया के निवासियों को भूमिपति होने का अधिकार दे दिया गया। १४ जुलाई १८६५ ई० की सरकारी घोषणा के अनुसार फ्रांसीसी प्रजा को नागरिक बनने का अधिकार दिया गया। १८६१ ई० से १८८१ ई० तक अल्जीरिया में भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रांतियां होती रहीं। राष्ट्रीय आन्दोलन की आग मार्च १८७१ ई० में भड़क उठी और जनवरी १८७२ ई० तक जलती रही। राष्ट्रीय आन्दोलन को फ्राँसीसी शासकों ने सख्ती के साथ दबा दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन के आरम्भ होते ही पुनः गवरनर जनरल का पद स्थापित कर दिया गया। उसके बाद फ्रांसीसी बस्तियों के बसाने की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। १८७१ ई० में अल्जीरिया में योरुपीय लोगों की संख्या ३ लाख ७६ हज़ार हो गई जिनमें १ लाख ४० हज़ार फ्राँसीसी अल्जीरिया के निवासी बन गये।

१८८१ से १८८६ ई० तक अल्जीरिया में फ्रांसीसी शासकों की नीति यह रही कि समस्त अल्जीरिया फ्रांस में सम्मिलित कर लिया जाय। १८६२ से १८६६ ई०

तक इस नीति की पुष्टि के लिये जुलेइन फेरी की अध्यक्षता में एक कमीशन बैठी जांच करती रही उसने अल्जीरिया को फ्रांसीसी मंत्रीमंडल में मिलाने के विरुद्ध अपना फैसला दिया।

इसलिये १८९६ ई० की घोषणा के अनुसार अल्जीरिया की सरकार का प्रधान पुनः एक गवर्नर जनरल बनाया गया। अल्जीरिया में बड़ी तथा छोटी धारा सभायें भी स्थापित की गईं। छोटी धारा सभा में प्रजा के चुने हुये सदस्य और बड़ी सभा में सरकारी अफसर तथा कुछ प्रजा के निर्वाचित सदस्य रक्खे गये।

२४ दिसम्बर १९०२ ई० में एक कानून बनाया गया। उसके अनुसार दक्षिणी अल्जीरिया उत्तरी अल्जीरिया से राजनैतिक तथा शासन रूप से अलग कर दिया गया। इस कानून के बनाने का मुख्य कारण यह था कि दक्षिण की ओर अल्जीरिया की भूमि अधिक दूर तक बढ़ गई थी। १८९८ ई० के पश्चात् लाफेरोरे (१८९२) जोनार्ट (१९००) रेवाएल (१९०१) जोनार्ट (१९०३) लुबोंद (१९२१) जोनार्ट तीसरी बार (१९१८) अबेल (१९१९) स्टीग (१९२१) वायोलेट (१९२५)

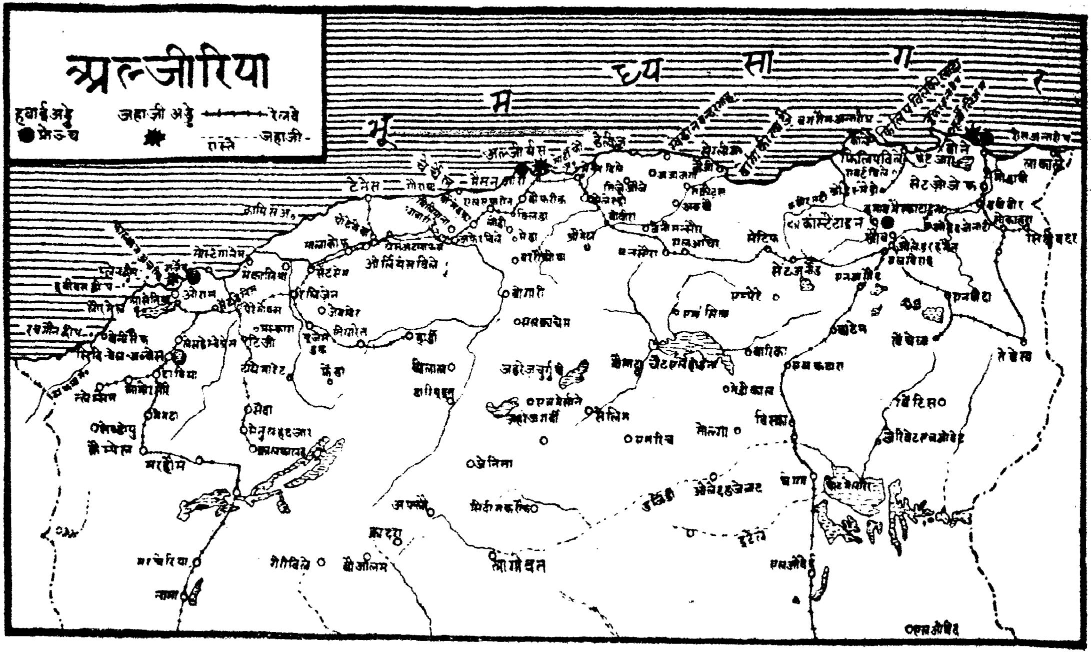
और वार्डेस (१६२७) अल्जीरिया के गवर्नर जनरल बनाये गये।

बीसवीं सदी के आरम्भ से ही फ्रांस ने अल्जीरिया के प्रति जो नीति स्थापित की है उसके अनुसार अल्जीरिया की उन्नति लगातार हो रही है। गत महायुद्ध के समय अल्जीरिया के निवासी फ्रांस के बड़े राजभक्त बने रहे। यद्यपि विदेशी दूतों ने उन्हें भड़काने का प्रयत्न किया था फिर भी अल्जीरिया ने १ लाख ७३ हज़ार सैनिक और १ लाख १६ हज़ार मज़दूर फ्रांस को दिये थे। युद्ध में अल्जीरिया के २५ हजार सैनिक काम आये। ३० नवम्बर १६१८ ई० की आज्ञा के अनुसार अरब कर बन्द कर दिये गये। ४ फरवरी १६१६ ई० को एक नया विधान अल्जीरिया के लिये बनाया गया जिसके अनुसार वहाँ के निवासियों को राजनैतिक अधिकार प्रदान किये गये हैं।

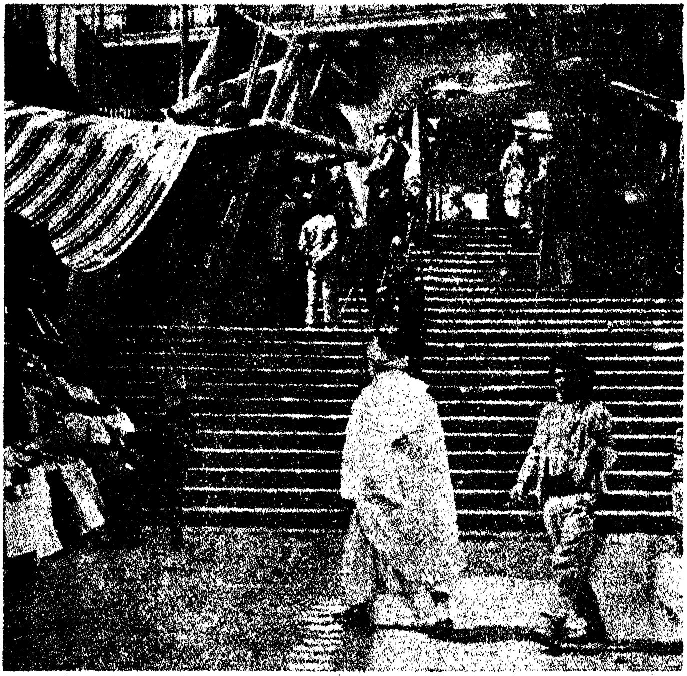
आधुनिक महासमर के आरम्भ में अल्जीरिया ने फ्रांस का साथ दिया। फ्रांस के पतन होने पर उसकी स्थिति बिगड़ी फिर भी वह विची सरकार का राजभक्त बना रहा।

जनसंख्या

१९३६ ई० में अल्जीरिया की जनसंख्या ६०,६३,४९६ थी। उस समय नगरों की जनसंख्या ५९,८१,२३१ थी। इसमें से ५,४२,२२५ दक्षिणी प्रदेश में रहते थे। बेरबेर और अरब जाति के लोगों की अधिकता है। अरबी आक्रमण का प्रभाव जातीयता पर बहुत कम पड़ा है परन्तु अरबी भाषा तथा इसलाम धर्म का प्रचार अल्जीरिया में गया। कबोलिया, औरेस और सहारा के ओसिसों में बेरबेर भाषा अब भी प्रचलित है। मोज़ाबाइट लोग कट्टर मुसलमान नहीं हैं। १८३० ई० के बाद से आदि निवासियों की संख्या में अच्छी वृद्धि हुई है। आदि जाति का तीन चौथाई भाग टेल प्रान्त में निवास करता है पहाड़ी प्रदेश में मैदानों की अपेक्षा आबादी अधिक है। १८३० ई० के पश्चात् योरुपीय लोगों की संख्या में भी अच्छी बृद्धि हुई है। १८३० ई० में योरुपीय लोगों की संख्या ६०० थी। १८५६ ई० में यह बढ़कर १ लाख ६९ हज़ार हो गई। फ्रांसीसी तथा इटैलियन लोग अधिक मात्रा में आ बसे हैं। ओरान के



अल्जीरिया
हवाई अड्डे
जहाजी अड्डे
रेलवे
रास्ते
जहाजी
भू
म
ध्य
सा
ग
र
अल्जीयर्स
टेनेस
ओरान
ओर्लियंसविले
कॉन्स्टैंटाइन
सेट ज़ोजेफ
सेटिफ
बोने
मरहौम
मार्चेरिया



अल्जीर्स नगर के बाज़ार में प्रायः दुकानें ऊँचाई पर बनी हैं।
दुकानों के ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां बनी होती हैं।

फ्रांसोसी जो स्पेनी स्त्रियों से पैदा होते हैं यदि बालिग़ होने पर किसी दूसरी जाति का होने का अधिकार नहीं बतलाते तो वह फ्रांसीसी ही माने जाते हैं। स्पेन से यहूदी लोग भी अल्जीरिया में आ बसे हैं।

१९३८ ई० में अल्जीरिया की जनसंख्या ७२ लाख ३४ हज़ार ६४८ थी जिसमें लगभग १० लाख योरुपीय लोग थे।

नगर

अल्जीयर्स अल्जीरिया की राजधानी है। अल्जीयर्स की कुल जनसंख्या २ लाख ६४ हज़ार २३२ है और म्यूनिस्पैलिटी की जनसंख्या लगभग २ लाख १६ हज़ार है। अल्जीयर्स में योरुपीय लोगों की जनसंख्या आदि निवासियों की अपेक्षा बहुत अधिक है। ओरान नगर समुद्र तट पर है। यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह हवाई तथा जहाजी अड्डा है। गत महासमर तथा आधुनिक महासमर में यह नगर बहुत प्रसिद्ध हो गया है। इसकी जनसंख्या २० लाख १० हज़ार है। कान्स्टैंटाइन अल्जीरिया का एक बड़ा ही प्रसिद्ध तथा प्राचीन नगर

है। इसकी जनसंख्या १ लाख ३४ हज़ार है। कांस्टैं-टाइन में योरुपीय लोगों की संख्या लगभग ४२ हज़ार है। बोने की जन संख्या ४६ हज़ार है यह भी एक प्रसिद्ध नगर तथा सैनिक अड्डा है। बेल-अबेस की जन-संख्या ४१ हज़ार है। मोस्टागानेम नगर की जनसंख्या २५ हज़ार है। टेल्मेसेन की जनसंख्या २५ हज़ार है। सेटिफ की २३ हज़ार है। तूगूर्ट नगर की जनसंख्या १३ हज़ार, ग़ारदैया की ११ हज़ार, एल ओवेद की ६ हज़ार विस्क्रा नगर की ६ हज़ार और लग़्वत की ७ हज़ार है।

शासन

अल्जीरिया को न तो उपनिवेश कहा जा सकता है और न वह पूर्णरूप से आधीन है। फ्रांस की सरकार वहां के लिये एक गवरनर जनरल नियुक्त करती है। उसकी सहायता के लिये एक मंत्री तथा एक सभा रहती है अल्जीरिया के प्रतिनिधि फ्रांसीसी पार्लियामेंट के सदस्य हैं। अल्जीरिया में दो स्थानीय धारा सभायें हैं। कोष

सम्बन्धी सभा में २४ उपनिवेशीय प्रतिनिधि, २४ आदि निवासियों के प्रतिनिधि और २१ मुसलमान प्रतिनिधि सदस्य हैं। मुसलिम सदस्यों में कबीले वर्ग के अलग प्रतिनिधि हैं। बड़ी कौंसिल में प्रजा के चुने हुये तथा सरकार द्वारा नियुक्त सदस्य हैं। यह दोनों धारा सभाएँ बजट पर अपना मत प्रगट करते हैं। १६०० ई० के नियमानुसार अल्जीरिया को अपने शासन, ऋण और प्रजा काल के लिये जिम्मेदार बना दिया गया है। परन्तु फ्राँस की सरकार अल्जीरिया की धारा सभा को कार्रवाई को रद्द करने का अधिकार है। अल्जीरिया की जल तथा स्थल की सेना का व्यय फ्रांस की सरकार देती है परन्तु अल्जीरिया की सरकार अपनी आय का ६ प्रतिशत युद्ध के लिये फ्राँस को देती है। इस समय अल्जीरिया बजट लगभग ५६ करोड़ रुपये का होता है। योरुपीय तथा देशी लोगों पर एक ही प्रकार के कर लगाये गये हैं।

उत्तरी अल्जीरिया में तीन विभाग (ओरान, अल्जेर और कान्सटैंटाइन) हैं। प्रत्येक विभाग में म्यूनिस्पल सभाएँ हैं। इन सभाओं की सहायता शेख

कैद या आगा लोग करते हैं। प्रजा प्रत्येक सभा के लिये अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करती है।

२४ दिसम्बर १६०२ ई० की सरकारी घोषणा के अनुसार दक्षिणी प्रदेशों का बजट अलग बनने लगा। दक्षिणी अल्जीरिया ऐनसेफी, गारदैय्या, तुगरूत और ओसिस चार भागों में बँटा है। ऐनसेफी की राजधानी ऐनसेफी, गार्दैय्या की लगवत, तूगरूत की तूगरूत और ओसिस की वर्कला है। प्रत्येक विभाग ज़िलों में बँटा है और एक सैनिक अफसर के अधिकार में है जो गवरनर जनरल के कथनानुसार कार्य करता है।

राष्ट्रीय आन्दोलन

अल्जीरिया में राष्ट्रीय तथा क्रान्तिकारी प्रचार जो एटोइले नार्ड अफ्रीकैने द्वारा होता था उसे उसके नेताओं की गिरफ्तारी करके रोक दिया गया। अल्जीरिया के उलमा लोग मुसलमानी धर्म को पुनः स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वह धार्मिक तथा सांस्कृतिक नियमों पर यह धर्म स्थापित करना चाहते हैं। अल्जियर्स में

उलमा लोगों की एक काँग्रेस हुई थी। इस कांग्रेस का विच्छेद हो गया। शेख एल ओक्वी एक प्रभुत्वशाली अल्जीरियन व्यक्ति था कांग्रेस से अलग हो गया। उसे कांस्टैंटाइन बेन बाबिस की सहायता मिलती है। इस व्यक्ति ने उलमा के विरुद्ध एक धार्मिक संस्था स्थापित की उसका नाम एल इस्लाहुल इस्लाही रक्खा। इस संस्था का ध्येय पूर्ण रूप से नैतिक तथा सामाजिक था। मुसलिम कांग्रेस ने समस्त देश की प्रजा को संगठित करने का प्रयत्न किया परन्तु फिर भी भेद-भाव न मिट सका। जनवरी मास में मुसलमान डिप्टी जो एक साथ ही स्तीफा देकर अलग हो गये वह फिर अपने पदों पर लौटे और उन्होंने ब्लम वायोलेट बिल का समर्थन किया। इस नियम के अनुसार २० हजार देशी आदमियों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ। अल्जीरिया के निवासी सदैव से ही फ्रांसीसी सरकार के विरुद्ध विप्लव करते आये हैं।

अल्जीयर्स

यह नगर अल्जीयर्स खाड़ी के पश्चिम साहेल पहाड़ियों के ढाल पर स्थित है। समुद्र तट पर होने और सैनिक आवश्यकता के कारण इसकी उन्नति हुई है। यह नगर अल्जीरिया की राजधानी है। अल्जीरिया के गवरनर जनरल यहीं रहते हैं। अल्जीरिया की धारा-सभाओं की बैठक इसी नगर में होती है। नगर के चारों ओर तुर्की समय की चहारदीवारी खिंची है। आज कल यह नगर उत्तर से दक्षिण १० मील लम्बाई में फैला हुआ है।

आधुनिक अल्जीयर्स नगर योरुपीय ढंग का बना हुआ है। नगर में बड़ी तथा छोटी सड़कें बहुत हैं। प्राचीन मसजिदें तथा भवन नष्ट हो गये हैं फिर भी उनके खँडहर उनकी याद दिलाते हैं। बन्दरगाह की सीमा डेला रिपब्लिक नामक बनाती है। उत्तर की ओर डे फ्राँस नामक और दक्षिण कारनाट नामक है। इन सड़कों के मेहराब बन्दरगाह के घाटों से लगभग ४८ फुट ऊँचे हैं। इन्हीं सड़कों पर अल्जीरिया के प्रधान

सरकारी तथा व्यापारिक भवन हैं। बाबुल-वाद के आस-पास स्पेनी लोगों की बस्ती है। अधिक उत्तर की ओर से एस यूगेन का पास पड़ोस वाला भाग है। डू-गवर्नमेंट के पश्चिम एक छोटी सड़क आधुनिक मठ को जाती है। यह मठ एक मस्जिद के स्थान पर बनाया गया है। यहीं यहां के गवरनर शीतकाल में रहते हैं। यहीं आर्च विशप का महल है। इसी स्थान पर डे सरकारों का महल था। इसी के समीप एक सुन्दर मूर भवन में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की मूर्ति है। डे लार्मोन, बाबुल-ओबेद तथा समुद्र के मध्य एक तंग सड़क है। इस सड़क के दोनों ओर अल्जीयर्स नगर का प्राचीन भाग स्थित है। बाब अज़ौन मार्ग डेलारिपब्लिक नामक सड़क को जाता है। डेलारिपब्लिक चौराहे से डइस्ली ड्योंस्डउरविले सड़कों का आरम्भ होता है। यह सड़कें अल्जियर्स की प्रधान व्यापारिक केन्द्र हैं।

पहाड़ी के ऊपर अल्जीयर्स का जो भाग है वह अब भी प्राचीन ढंग का बना है परन्तु रैंडम और ड्मोंट-डरविले सड़कों को काटकर यह शानदार बना दिया गया है।

कैस्बाह का गढ़ समुद्र धरातल से लगभग ४०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यह सोलहवीं सदी का बना हुआ है। यहीं पर अन्तिम दो डे सरदार रहा करते थे। मुस्तफा अल्जीयर्स नगर का एक भाग है। पहले यह अल्जीयर्स नगर में शामिल था। उसके बाद अलग नगर हो गया परन्तु फिर अल्जियर्स और इसके मध्य की किलेबन्दी तोड़ कर इसे अल्जियर्स से मिला दिया गया तब से इसकी उन्नति हुई है। नगर की निचली गलियाँ अधिक घनी बसी हैं और वहाँ रोज़गार खूब होता है। ऊँची गलियों में सुन्दर भवन बने हैं जहां से समुद्र का दृश्य बड़ा ही सुहावना प्रतीत होता है। ऊँची सड़कों पर ही गवरनर का ग्रीष्म कालीन महल, विश्वविद्यालय और कौतुकालय है।

खैरउद्दीन ने पेनोन द्वीप को अफ्रीका की भूमि से मिलाकर अल्जियर्स का तुर्की बन्दरगाह बनाया था। पेनोन द्वीप में प्रकाशघर, एडमिरेलिटी भवन और तुर्की काल की और दूसरी इमारतें हैं। यहां स्पेनिश काल के भी भवन हैं। यह भाग छिछले तालाब के उत्तर पूर्व की ओर फैला हुआ है। छिछले जल भाग में,

मछली मारने वाली, आमोद-प्रमोद करने वाली और टारपिडो नावें रहती हैं। इस तालाब के दक्षिण समुद्र जल का एक विशाल भाग है।

फ्रांसीसी बन्दरगाहों में अल्जीयर्स बन्दरगाह का मार्सेल्स के बाद दूसरा स्थान है। यहां बहुत अधिक सामान उतारा जाता है और बहुत अधिक संख्या में जहाज रहते हैं। १९२९ ई० में अल्जीयर्स बन्दरगाह पर १२,६१,७९९ टन सामान उतारा गया था और १३ लाख ८० हजार टन (१ टन = २८ मन) सामान इस बन्दरगाह से निर्यात किया गया था।

अल्जीयर्स बन्दरगाह पर कोयला, सूती कपड़ा, धातु का बना सामान, छकड़े, ओटामोबाइल आदि सामान बाहर से आयात होता है और शराब, भेड़, चमड़ा, साग-तरकारी, अंगूर, आलू और लोहा बाहर भेजा जाता है। मार्सेल्स से अल्जीयर्स जहाज आने में २६ घंटे और ओरे से ४० घंटे लगते हैं।

अल्जीयर्स नगर की ख्याति व्यापारिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ रही है। नगर की कुल जनसंख्या

२ लाख ६४ हज़ार है। म्यूनिस्पैलिटी की जन संख्या लगभग २ लाख २० हजार है जिसमें १ लाख ४० हज़ार आदि निवासी हैं।

अल्जीयर्स नगर के जिस भाग में अब मल्लाह लोग रहते हैं वहीं पर रोमन काल में इकोजियम नगर बसा था। पाँचवीं सदी तक इकोजियम के पादरियों का वर्णन आता है। बुलीकिन बो जीरी ने आधुनिक नगर की नींव ९४४ ई० में डाली थी। यह ज़ीरिद सनहाजा वंश की नींव डालने वाला था। ११४८ ई० में सिसली के रोगेर द्वितीय ने जीरिदसन हाजा वंश को गद्दी से उतार दिया। ११५९ ई० में इस नगर पर अल्मोहद्दीस ने और १३०० ई० में अब्दुलवाहिद ने अधिकार जमाया। तुर्की काल में अमीरों की छत्र-छाया में इस नगर को काफी स्वतन्त्रता प्राप्त थी। १३०२ ई० में स्पेनी लोगों ने पेनोन द्वीप पर अधिकार जमाया उसके बाद अल्जीरिया और स्पेन के बीच खूब व्यापार होने लगा। जब तक मूर लोग स्पेन से निकाल कर बाहर नहीं किये गये तब तक अल्जीरिया की ख्याति संसार में नहीं फैली। ओरान और दूसरे बन्दरगाहों पर १५१० ई० में अधि-

कार जमाने के पश्चात् स्पेनी लोगों ने पेओन की क़िले-बन्दी की।

अक्तूबर १५४१ ई० में चार्ल्स पंचम ने नगर पर अधिकार करना चाहा परन्तु उसे सफलता नहीं हुई क्योंकि हसनपाशा की क्षत्र-छाया में अल्जीरिया के निवासियों ने डट कर सामना किया। १८१६ ई० में इङ्गलैंड नगर पर अंग्रेज़ों ने गोलाबारी की थी। ४ जुलाई १८३० ई० को जनरल डी बोर्नमोंट ने नगर पर आक्रमण किया और एक दिन के बाद नगर ने आत्म समर्पण कर दिया।

बर्बर जाति

अल्जीरिया के बर्बर लोगों के सम्बन्ध में जो बातें ज्ञात हुई हैं उनसे पता चलता है कि ये बड़े ही सभ्य तथा सुशील हैं। अल्जीरिया, ट्यूनिस और मरक्को में बर्बर जाति के लोग निवास करते हैं। यह लोग चाहे रेगिस्तान में रहते हों चाहे पहाड़ या मैदान में सब कहीं इनका प्राकृतिक स्वभाव एक सा रहता है। यह

लोग सफेद वर्ण के हैं और शायद हालैंड तथा बेल्जियम से आकर उत्तरी अफ्रीका में बसे हैं। ये लोग सफेद वर्ण वालों की भांति ही काम भी करते हैं। इनमें सुशीलता, अतिथि सत्कार, सत्यता, दीर्घ विश्वास और धर्म परायणता की विशेषतायें पाई जाती हैं मुसलमानी धर्म स्वीकार करने के कारण वे योरुपीय लोगों की भांति योरुपीय रेखा पर उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सके क्योंकि उनका धर्म इसमें बाधक था।

बर्बर लोग उस विशाल शक्तिशाली जाति की सन्तान हैं जिसका किसी समय में अटलांटिक सागर से लाल सागर और हारान तक तथा क्रीट से टिम्बक्टू और सूडान तक राज्य फैला हुआ था। अब भी उनमें प्राचीन कला और विज्ञान के उदाहरण पाये जाते हैं। विजय करने की उत्तेजना और स्वयं शासन की शक्ति उनमें अब भी है। यदि उनकी इन विशेषताओं की उन्नति की जाय तो वह फिर एक विशाल जाति बन सकती है।

यदि प्राचीन मिट्टी के बर्तनों, चित्रों और स्मारकों

का अध्ययन किया जावे तो इन लोगों का जो सम्बन्ध मिस्र वालों के साथ रहा है उसका पता चल जावेगा।

स्नाम एक मूर्ति या शिलाओं के समूह को कहते हैं। यह अल्जीरिया और बून्सादा के मध्य होकर बर्बर संस्कृति का स्मारक है। यहां शिलाओं के वृत्त बने हैं। वृत्त बहुत से हैं। अब यह नाम उस पहाड़ी का कर दिया गया है जो होडना तट के उत्तर की ओर पूर्वी सीमा पर स्थित है। इसमें पूर्व-ऐतिहासिक काल के वह स्मारक हैं जो और कहीं भी दूसरे स्थानों में नहीं पाये जाते हैं। कुछ समय के बाद स्नाम शिलाओं का शायद अन्त हो जावेगा क्योंकि घर, सड़क और पुल बनाने वाले यहीं से पत्थर ले जाते हैं। स्नाम के वृत्त शिलाओं के बने हैं। यह शिलायें ३ फुट ऊँची और ६ से आठ इञ्च तक मोटी हैं। वृत्तों के मध्य में पत्थर के टुकड़ों के बड़े बड़े ढेर हैं। प्रत्येक वृत्त के दक्षिण-पूर्व चपटी शिलाओं का बना हुआ मार्ग सा खाली स्थान है। समस्त स्नाम स्मारक के गोलों की लम्बाई २० से ३० फुट तक है। सबसे बड़ा और सबसे अधिक नष्ट किया हुआ वृत्त

पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। खोज करने वाले सैनिकों के एक समूह ने यहां की शिलाओं का एक स्तम्भ चिन्ह मात्र बनाने का प्रयत्न किया था। पहाड़ी की चोटी पर जो स्मारक वृत्त है वहां के पत्थर अब काले हो गये हैं।

अरब जाति के साथ रहने तथा मुसलमान धर्म स्वीकार करने से बर्बर लोगों के मध्य भी अरब रीति रिवाज फैल गये हैं। बर्बर लोग बड़े ही स्वतंत्र प्रकृति के होते हैं। समय पर उसका वश नहीं चलता नहीं तो वे किसी के आधीन रहना पसंद नहीं करते। वह मिट्टी तथा पत्थर के मकानों में रहा करते हैं। बर्बर जाति की स्त्रियां तथा लड़कियां चांदी के जेवर पहनती हैं। बर्बर जाति के लोग बीमारी की अवस्था में मन्त्रों से झाड़-फूँक भी करते हैं। जादू-टोना आदि का रिवाज अब धीरे धीरे कम होता जा रहा है।

बर्बर लोग ज़ैतून का तेल अब भी प्राचीन ढंग से ही निकालते हैं। ज़ैतून के तेल निकालने के लिये एक प्रकार के पत्थर के कोल्हू का प्रयोग होता है। यह कोल्हू

गोलाकार होता है और बीच में पोला रहता है। पोले स्थान में ही ज़ैतून डाले जाते हैं और पत्थर की चक्की के नीचे पिसते हैं। चक्की की मोटाई लगभग एक फुट और व्यास लगभग चार या पाँच फुट होता है। चक्की लकड़ी की एक बड़ी बल्ली के मध्यवर्ती भाग से जुड़ी रहती है। हमारे देश के देशी कोल्हुओं की भांति बल्ली में खच्चर जोता जाता है और वह एक गोलाकार स्थान में बल्ली में जोता हुआ घूमता रहता है। चक्की में जैतूनों के डालने का कमा स्त्रियाँ करती हैं। तेली के बैल की भांति खच्चर की आंख में भी पट्टी बांध दी जाती है। चक्की के अन्दर जैतूनों को चलाने का काम लकड़ी के एक बड़े डंडे से लिया जाता है।

तयार होने के पश्चात् जैतून का तेल बकरी के चमड़े या मिट्टी के बने बर्तनों और मटकों में रख कर बाज़ार भेजा जाता है। बर्बर लोग पहाड़ी स्थानों पर अंजीर की शराब तयार करते हैं।

बर्बर लोग मिस्री लोगों की भांति ही मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। उनका पहनावा भी मिस्री लोगों से ही मिलता जुलता है। स्त्रियाँ अधिकतर चमकदार रङ्गीन

कपड़े पहिनना पसन्द करती हैं। बर्बर लोगों के देश में पानी की बहुत कमी है। इसलिये प्राकृतिक रूप से ही वे गन्दे रहते हैं। जहाँ कहीं भी पानी के चश्मे हैं वहीं सैकड़ों स्त्रियों की भीड़ रहती है। स्त्रियाँ मटकों में भर भर कर अपने घरों को ले जाती हैं। पनघट पर वह घण्टों घरेलू तथा व्याह और तलाक़ आदि के सम्बन्ध में बातें करती रहती हैं।

आधुनिक स्थिति

१६४० ई० में फ्रांस के पतन होने के पश्चात् फ्रांसीसी उपनिवेशों की स्थिति बड़ी सोचनीय हो गई है। फ्रांसीसी साम्राज्य के भिन्न भिन्न देशों में धुरी राष्ट्रों का खूब प्रचार हुआ। योरुप में द्वितीय मोर्चा खोलने की मांग को इङ्गलैंड और अमरीका ने स्वीकार कर लिया और उसी के फल स्वरूप अमरीकन सेना उत्तरी अफ्रीका में उतार दी गई। साफी, मोगादोर, अगादिह, फेढाला, ओरान, अल्जियर्स बन्दरगाहों पर मित्र सेनायें

उतारी गईं। मुतीफोम अल्जियर्स के समीप एक हवाई तथा समुद्री अड्डा है।

जब अल्जियर्स में अमरीकन सेना उतरी तो मैसन ब्लांचे नामक हवाई स्टेशन ने बिना विरोध किये ही आत्म समर्पण कर दिया। बेल्दी हवाई स्टेशन ने भी कुछ समय तक युद्ध किया उसके बाद आत्म समर्पण कर दिया।

ओरान में कई स्थानों पर अमरीकन सेना उतारी गई जिससे नगर चारों ओर से घेर लिया गया। दो टारपिडो नावें और एक स्लूप मित्र सेना के ओरान में नष्ट हुये। अल्जियर्स नगर को भी मित्र सेना ने चारों ओर से घेर लिया और नगर की चौहद्दी में कई स्थानों पर प्रवेश कर गई। अल्जियर्स गढ़ कुछ समय तक गोला-बारी करता रहा परन्तु बाद को उसने आत्म समर्पण कर दिया। अमरीकन टैंक ओरान ननर में ८ नवम्बर १६४२ को ११ बज कर ४५ मिनट पर प्रवेश कर गये। और पहुँचते ही एक पहाड़ी और संताकरूग गढ़ पर अधिकार जमा लिया।

मेजर जनरल चार्ल्स रेडर ने त्रिची समुद्री जहाजों

का सामना करते हुये १२ घन्टे में ही अल्जियर्स नगर पर अधिकार जमा लिया। अल्जियर्स के मैसन ब्लांचे हवाई अड्डे ने बिना युद्ध के ही आत्मसमर्पण कर दिया। बेल्दी हवाई अड्डे पर आर्मर्ड सेना ने अधिकार जमाया। ओरान के समीप लासेनिया पर भी अमरीकन सेना ने अधिकार जमा लिया। अर्ज्यू प्वाइंट ओरान से २५ मील पूर्व की ओर स्थित है। अर्ज्यू पर विची सेना ने अमरीकन सेना का सामना किया परन्तु अन्त में अमरीकन सेना ने अधिकार जमा लिया। अल्जियर्स में सेना उतारने में केवल एक अमरीकन जहाज़ नष्ट हुआ।

मित्र सेना की विजय देख विची सेना ने अमरीकन सेना के साथ अल्जियर्स में स्थानीय क्षणिक संधि कर ली। क्षणिक संधि पर फ्रांस की ओर से जनरल ओल्ज़ फ्रांस की उन्नीसवीं सेना के सेनापति ने और अमरीका की ओर से उतरने वाली अमरीकन सेना के सेनापति जनरल होवर ने हस्ताक्षर किये। क्षणिक संधि के अनुसार अल्जियर्स में युद्ध बन्द हो गया और अल्जियर्स में फ्रांसीसी सेना बैरकों के भीतर कर दी गई परन्तु वह सशस्त्र रक्खी गई है।

अल्जीरिया-दर्शन

अमरीकन सेना मोरक्को, ट्यूनिस और अल्जीरिया तीनों देशों पर एक साथ बढ़ रही है। थोड़े दिनों में ही वह सभी स्थानों पर अधिकार प्राप्त कर लेगी। अमरीकन सेना के उतरने का समाचार पाकर हिटलर ने जर्मन तथा इटैलियन सेना को आज्ञा दे दी कि वह अनधिकृत विची फ्रांस पर अधिकार करले। इसलिये हिटलर की आज्ञानुसार जर्मन सेना ने समस्त विची फ्रांस पर अधिकार कर लिया है। धुरी राष्ट्र के वायुयान अब अल्जीरिया के जहाज़ी, हवाई और सैनिक अड्डों पर बम्ब वर्षा कर रहे हैं। समाचार प्राप्त हुआ है कि टूलन से फ्रांसीसी जहाज़ी बेड़ा कहीं दूसरे स्थान को चला गया है। समस्त उत्तरी अफ्रीका में कुल १ लाख ४० हजार सेना उतारी गई है।

